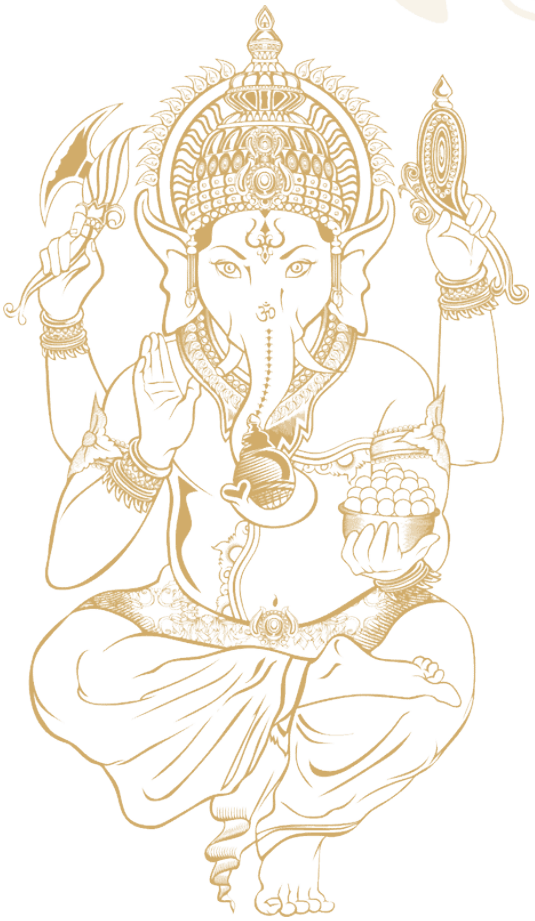

Divyanshu Aastha

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121694707

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
17-18/09/2002	जन्म तिथि	01/10/2003
मंगल-बुधवार	दिन	बुधवार
घंटे 01:10:00	जन्म समय	16:56:00 घंटे
घटी 47:45:31	जन्म समय(घटी)	26:55:59 घटी
India	देश	India
Gwalior	स्थान	Jhansi
26:12:00 उत्तर	अक्षांश	25:27:00 उत्तर
78:09:00 पूर्व	रेखांश	78:34:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:17:24	स्थानिक संस्कार	-00:15:44 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:03:47	सूर्योदय	06:07:46
18:18:39	सूर्यास्त	18:03:02
23:53:26	चित्रपक्षीय अयनांश	23:54:20

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
चन्द्र 3वर्ष 3मा 14दि		25:41:08	मिथु	लग्न	कुंभ	22:13:43	बुध 4वर्ष 1मा 29दि	
राहु		00:50:55	कन्या	सूर्य	कन्या	13:58:14	शुक्र	
01/01/2013		18:56:51	मक	चंद्र	वृश्चि	26:44:01	30/11/2014	
01/01/2031		18:19:53	सिंह	मंगल	कुंभ	06:19:47	30/11/2034	
राहु	14/09/2015	18:51:39	कन्या व	बुध	सिंह	27:15:04	शुक्र	01/04/2018
गुरु	07/02/2018	15:54:07	कर्क	गुरु	सिंह	13:31:55	सूर्य	01/04/2019
शनि	13/12/2020	13:14:18	तुला	शुक्र	कन्या	25:45:15	चन्द्र	30/11/2020
बुध	03/07/2023	04:40:50	मिथु	शनि	मिथु	18:46:52	मंगल	30/01/2022
केतु	20/07/2024	18:29:00	वृष व	राहु	मेष	27:22:59	राहु	29/01/2025
शुक्र	21/07/2027	18:29:00	वृश्चि व	केतु	तुला	27:22:59	गुरु	30/09/2027
सूर्य	14/06/2028	01:52:51	कुंभ व	हर्ष व	कुंभ	05:33:48	शनि	30/11/2030
चन्द्र	14/12/2029	14:35:20	मक व	नेप व	मक	16:37:13	बुध	30/09/2033
मंगल	01/01/2031	21:08:51	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	23:37:50	केतु	30/11/2034

लग्न-चलित

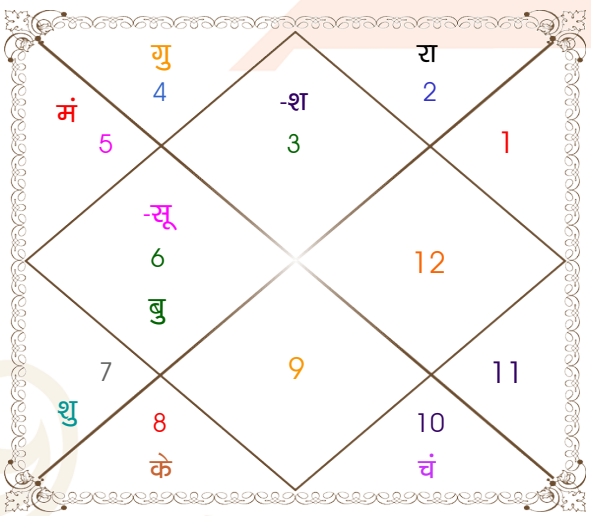

लग्न-चलित

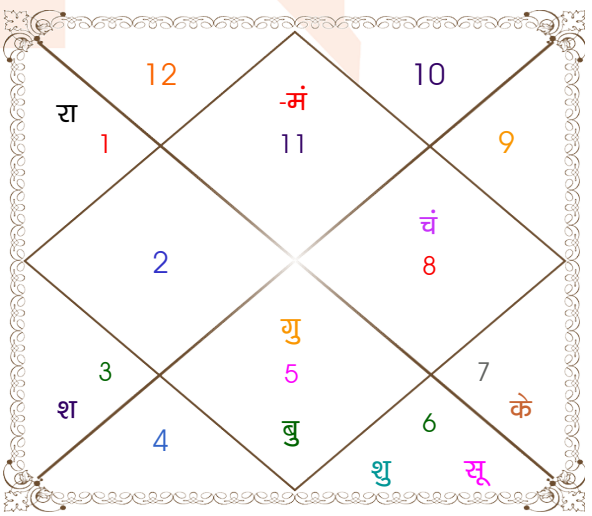

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	कीटक	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	वानर	मृग	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	मंगल	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	मकर	वृश्चिक	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	21.00		

Divyanshu का वर्ग मार्जार है तथा Aastha का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Divyanshu और Aastha का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

Divyanshu मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

Aastha मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि Divyanshu कि कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल Divyanshu कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Divyanshu तथा Aastha में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।